हिमाचल प्रदेश

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

# स्कूली शिक्षा में जन सहभागिता को सफल बनाने हेतु प्रशिक्षण जरूरी

## सभी प्रारंभिक स्कूलों में ग्राम-शिक्षा समिति/मात -अध्यापक संघ/अभिभावक-अध्यापक संघ गठित

**सर्व** शिक्षा अभियान के अंतर्गत जन सहभागिता की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। स्कूल प्रबंधन, शिक्षा व्यवस्था, अध्यापकों की उपलब्धता, स्कूल में निर्माण कार्यों आदि का जिम्मा ग्राम शिक्षा समितियों के माध्यम से जन समुदाय को ही सौंपा गया है। अर्थात स्कूली शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने की द ष्टि से किए जा रहे समस्त प्रयासों का लाभ स्कूलों तक पहुंचे, यह स्वयं बच्चों के अभिभावकों के हाथों में है। अपनी सक्रियता, तत्परता एवं जागरूकता से वे बेहतर गुणवत्तापरक शिक्षा के अधिकार अपने बच्चों को दिला सकते हैं। अभियान के अंतर्गत जन समुदाय ग्राम शिक्षा समितियों एवं मात अध्यापक संघों के रूप में महत्त्वपूर्ण कड़ी का काम करता रहा है। लेकिन इनकी बेहतर भूमिका की सुनिश्चितता तभी संभव है जब उन्हें सही मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण प्राप्त हो और वह हर संभव शिक्षा में सुधार लाने की दिशा में अपना योगदान दे सकें। इसी उद्देश्य से सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत ग्राम शिक्षा समितियों/को दो दिवसीय तथा मात अध्यापक संघों को एक दिवसीय प्रशिक्षण अनिवार्य रखा गया है जिसके लिए एक विशेष मॉड्यूल तैयार किया गया है जिसमें उनकी भूमिका से संबंधित हरेक मुद्दे पर बात की जाती है। यह प्रशिक्षण संकुल स्तर पर दिया जाता है।

### प्रशिक्षण मॉडयूल के उद्देश्य :

- पाठशाला विकास में ग्रामीण शिक्षा समिति व मातृ अध्यापक संघ की सहभागिता बढ़ाना।
- शिक्षा के नवाचारों से माताओं व ग्रामीण शिक्षा समिति को अवगत करवाना तथा भागीदारी सुनिश्चित करना।
- सर्व शिक्षा अभियान के मुख्य उद्देश्यों (नामांकन एवं ठहराव) की पूर्ति हेतु समझ बनाना।
- सह–शैक्षिक गतिविधियों में माताओं व ग्रामीण शिक्षा समिति के योगदान की अवधारणा स्पष्ट करना व उन्हें वास्तविक रूप में शैक्षिक क्रियाकलापों से जोड़ना।

### प्रशिक्षण मॉड्यूल में सम्मिलित प्रमुख मुद्दे :

### ● सतत् समग्र मूल्यांकन

#### सतत् समग्र मूल्यांकन -क्या ?

बच्चों ने क्या सीखा और क्या नहीं सीखा। यह जानकारी अध्यापकों को समय रहते ही हो जानी चाहिए तभी वे अपने सिखाने के तरीकों में परिवर्तन करके बच्चे तक अपनी बात पहुँचाने का प्रयास कर पाएंगे। इस लिये अध्यापक को लगातार बच्चों का मूल्यांकन करते रहना होगा तथा जहां बच्चा पिछड़ रहा है, उस पर विशेष बल देना होगा। लगातार बच्चों के सीखने की जांच करना ही सतत् मूल्यांकन है।

शिक्षा बच्चे को भावी जीवन के लिये तैयार करती हैं। इसके लिये बच्चे के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास अर्थात् बौद्धिक, शारीरिक, संवेगात्मक, सामाजिक एवं सृजनात्मक विकास ज़रूरी है। बच्चों में इन पहलुओं के विकास के लिए अध्यापक को समय –समय पर मूल्यांकन करना होगा। व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का मूल्यांकन ही समग्र मूल्यांकन है।

मूल्यांकन का अर्थ है मूल्य अंकित करना। बच्चा उपलब्धि के किस स्तर पर है – उस स्तर का मूल्य अंकित करना ही मूल्यांकन है। इससे अध्यापक को बच्चे के उपलब्धि स्तर की जानकारी मिलती है तथा अगला लक्ष्य निर्धारण करने में सहायता मिलती है।

अगर बच्चे को सही अर्थों में शिक्षित किया जाता है तो जरूरी है कि उसके शैक्षिक एवं सह– शैक्षिक पहलुओं को इस प्रकार मूल्यांकित किया जाए कि वह बच्चे के पढ़ने, समझने, बोलने और लिखने की क्षमता को विकसित करे और उसके उपलब्धि स्तर को प्रगति की ओर ले जाये।

#### सतत् समग्र मूल्यांकन - क्यों ?

वर्तमान में छात्रों का मूल्यांकन वर्ष के अंत में होने वाली वार्षिक परीक्षाओं पर आधारित है। शैक्षिक सत्र के दौरान त्रैमासिक तथा छमाही परीक्षाएं होती हैं। जिनमें निम्न खामियां हैं :–

- तीन –तीन महीनों के अंतराल पर परीक्षा लेने से बच्चों के सीखने मे रह गई कमियों का समय रहते पता नहीं चलता तथा बाद में उनको दूर करने का पर्याप्त समय नहीं रहता। इसके अलावा तीन चार महीने बच्चे सीखने में आने वाली कठिनाइयों से जूझते हैं तथा आगे सीख पाने में असमर्थ रहते हैं।
- पढ़ाई में पिछड़ने के कारण बच्चा हीन भावना तथा तनाव का शिकार हो जाता हैं। यह तनाव बच्चों तक सीमित न रह कर माता–पिता और अध्यापकों तक जाता है।
- जब सीखने में आने वाली समस्याओं का निपटारा/निदान समय रहते नहीं होता तो बच्चे पढ़ाई में रूचि खो देते हैं। कुछ बच्चे तो पाठशाला आना ही छोड़ देते हैं।
- वर्तमान परीक्षा प्रणाली बच्चों में एक भय पैदा करती है। जब बच्चे अच्छी तरह सीख नहीं पाते तब वह परीक्षा में नकल करने जैसी बुरी आदतों का शिकार हो जाते हैं। वे विषय के चयनित अंशों को रट कर पास होने का प्रयास करते हैं तथा शिक्षा के मूल उद्देश्य से भटक जाते हैं।
- जिन विषयों की परीक्षा नहीं होती, वे अपना महत्व खो देते हैं तथा बच्चे के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास नहीं हो पाता।
- इस प्रणाली में मूल्यांकन मात्र बच्चे के शैक्षिक पहलू को ध्यान में रख कर किया जाता है। बच्चों के अन्य गुणों जैसे चित्र –कला, खेलें, गान, नृत्य, वाद–विवाद इत्यादि को अधिक महत्व नहीं मिलता। इससे ऐसे बच्चे जो शैक्षिक के बजाए सह–शैक्षिक गुणों से परिपूर्ण हैं – उनके मनोबल को बढ़ावा नहीं मिलता तथा वे हीन–भावना से ग्रसित रहते हैं।
- बच्चे में साफ–सफाई सम्बन्धी जागरूकता, शारीरिक एवं संवेगात्मक विकास, सामाजिक विकास तथा सृजनात्मकता का मूल्यांकन नहीं होता। इससे बच्चे के सर्वांगीण विकास की दिशा में अध्यापक अधिक प्रयास नहीं कर पाता।
- बच्चे शिक्षा को मात्र पास फेल से आंकते हैं। उनमें रटने की प्रवृति को बढ़ावा मिलता है।

#### सतत् समग्र मूल्यांकन -लाभ

सतत् समग्र मूल्यांकन में बच्चे के सीखने के स्तर की लगातार जॉच की जाती हैं जिसका रिकार्ड मास में तीन बार रजिस्टर में दर्ज किया जाता है।

- लगातार जॉच करने से बच्चे के सीखने में रह गई कमियों की जानकारी अध्यापक को समय रहते ही मिल जाती है तथा वह उन कमियों को उसी समय दूर करने का प्रयास कर पाता है।
- निरन्तर जॉच से अध्यापक को बच्चे के सीखने में आने वाली कठिनाईयों का पता चलता है तथा वह शिक्षण की अन्य विधियों का प्रयोग करके उन कठिनाईयों को दूर करने का प्रयास करता है।
- प्रत्येक बच्चा अपने तरीके से सीखता है और अलग–अलग समय लेता है। इससे अध्यापक प्रत्येक बच्चे को अपनी–अपनी गति और तरीके से सीखने का अवसर प्रदान करता है।
- बच्चे में साफ–सफाई के प्रति जागरूकता, शारीरिक एवं संवेगात्मक विकास, सामाजिक विकास तथा सृजनात्मकता का भी मूल्यांकन किया जाता है। इससे अध्यापक को पता चलता है कि बच्चे में किन गुणों के विकास पर बल देने की आवश्यकता है। इससे बच्चे के सम्पूर्ण विकास में सहायता मिलती है।
- बच्चा साल भर पाठ्यक्रम को छोटे –छोटे अंशों में बॉट कर पढ़ता है। सीखने में आने वाली कठिनाईयों का निदान लगातार होता है तथा उसे पढाई को लेकर किसी प्रकार का मानसिक तनाव नहीं रहता।
- निरन्तर मूल्यांकन से बच्चा परीक्षा के भय से मुक्त रहता है।

#### सतत् समग्र मूल्यांकन -कैसे ?

सतत् समग्र मूल्यांकन के तहत अध्यापक बच्चों का मूल्यांकन एक सुनियोजित एवं व्यवस्थित ढंग से वर्ष भर निरन्तर करता रहता है। इसके लिए वह बच्चों की सुविधा के अनुसार पाठ्यक्रम को छोटी –छोटी इकाइयों में बॉटकर पढाता है और साथ ही बच्चे के उपलब्धि स्तर को जॉचता है। इसे वह बच्चे के रिर्पोट कार्ड में अंकित करता रहता हैं। इससे बच्चा अपने पाठ्यक्रम की सम्पूर्ण विषय वस्तु को सहजता से ग्रहण कर सकता है और उसके लिए पढ़ाई बोझ भी नहीं रहती। हर बच्चा अपने तरीके से सीखता है और अलग–अलग समय लेता है। अध्यापक यदि आवश्यकतानुसार बच्चे को पाठ्यवस्तु से अवगत करवाते हैं तो सीखने –सिखाने की प्रक्रिया स्वतः ही सरल हो जाती है और बच्चे के व्यक्तित्व का हर एक पहलू सहज रूप से विकसित होता है। सतत् समग्र मूल्यांकन में बच्चे की लिखित एवं मौखिक योग्यता, व्यावहारिक रूप से किए जाने वाले प्रयोगों, सांस्कृतिक, खेल, वाद–विवाद, बच्चे की इन सभी उपलब्धियों को हर महीने रिर्पोट कार्ड पर दर्ज़ किया जाता है।

**यहाँ यह मानना गलत होगा कि यदि अध्यापक द्वारा बच्चे का सतत् समग्र मूल्यांकन किया जाता है तो बच्चे को परीक्षा से नहीं गुज़रना होता। बच्चे को आगामी श्रेणी में स्तरोन्नत करने के लिए अध्यापक उसकी परीक्षा लेता है लेकिन बच्चे के वर्ष भर किए गए शैक्षिक, सह-शैक्षिक मूल्यांकन को भी इसमें शामिल किया जाता है। बच्चा साल भर जब पाठ्यक्रम को छोटे-छोटे अंशों में बांटकर पढ़ता है तो वह विषय-वस्तु से भली भान्ति परिचित हो जाता है और उसे पढ़ाई को ले कर किसी प्रकार का मानसिक तनाव नहीं रहता।**

सतत् समग्र मूल्यांकन का एक अत्यन्त सकारात्मक पहलू यह भी है कि इसमें बच्चा साल भर परीक्षा के लिए बौद्धिक व मानसिक रूप से तो तैयार होता ही है पर परीक्षा के भय से मुक्त रहता है। इस प्रकार बच्चे के शैक्षिक व सह –शैक्षिक दोनों पक्ष उजागर होते हैं जो उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में सहायक होते हैं। सतत् मूल्यांकन होने से बच्चे के लगातार असफल हो कर एक ही कक्षा में बने रहने या उसके स्कूल छोड़ने की प्रवृति पर भी अंकुश लगता है।

#### दो दिवसीय ग्राम शिक्षा समिति प्रशिक्षण मॉड्यूल की विषय वस्तु

| | प्रथम सत्र | द्वितीय सत्र | त तीय सत्र | चतुर्थ सत्र |
|---|---|---|---|---|
| पहला दिन | ● प्रतिभागियों का पंजीकरण एवं परिचय<br>● प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्देश्य | ● पाठशाला में सीखने की प्रक्रिया में होने वाली गतिविधियां/नवाचार | ● सतत् एवं समग्र मूल्यांकन –क्या?, –क्यों?, कैसे?<br>● चर्चा | ● सतत् एवं समग्र मूल्यांकन में बच्चों के प्रगति प्रपत्र का पूर्ण ब्योरा देना<br>● चर्चा |
| दूसरा दिन | ● नामांकन व ठहराव से जुड़े मुद्दे<br>● चर्चा | ● मूल्य शिक्षा एवं समाज की भागीदारी<br>● बच्चों में स्वानुशासन को लेकर चर्चा | ● पाठशाला अवलोकन<br>● पाठशाला में वर्तमान में उपलब्ध साधन व कमियों का अवलोकन | ● पाठशाला विकास में ग्रामीण शिक्षा समिति की भागीदारी<br>● चर्चा |

#### एक दिवसीय मात अध्यापक संघ/अभिभावक अध्यापक संघ प्रशिक्षण मॉड्यूल की विषय वस्तु

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| पहला दिन | ● पंजीयन और परिचय<br>● कार्यक्रम के उद्देश्य<br>● सतत् समग्र मूल्यांकन –क्या, क्यों, कैसे? | ● बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु सतत् समग्र मूल्यांकन का महत्त्व–चर्चा | ● बच्चों का नामांकन/ठहराव/मूल्य शिक्षा | ● उपरोक्त मुद्दों पर प्रतिभागियों से चर्चा<br>● उपरोक्त मुद्दों पर माताओं/अभिभावकों की भूमिका<br>● विद्यालय विकास में माताओं की भूमिका |

### ● नामांकन

अच्छा व सार्थक जीवन जीने के लिए शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा बच्चे के शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक एवं संवेगात्मक विकास में सहायक है। इसलिए संविधान में प्रत्येक बच्चे के लिए प्रारम्भिक शिक्षा अनिवार्य की गई है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पाठशाला में बच्चों का शत –प्रतिशत नामांकन आवश्यक है अर्थात् समाज के सभी वर्गों के बच्चों को पाठशाला में दाखिल करवाया जाना अत्यंत ज़रूरी है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए समाज के चुने हुए प्रतिनिधियों, अध्यापक/अध्यापिकाओं और अभिभावकों को मिलजुल कर प्रयास करना होगा। ग्रामीण शिक्षा पंजिका तैयार करनी होगी।

#### नामांकन में आने वाली समस्याएँ:

–जन्म प्रमाण पत्र का न होना। –घरेलू कार्यों में बच्चों को व्यस्त रखना। –छोटे भाई –बहनों की देख रेख में व्यस्तता। –बाल–श्रम –घुमंतू परिवारों के बच्चों की पढ़ाई की समस्या। –विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की समस्या –शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी। – बालिका शिक्षा को महत्व न देना। – घर से पाठशाला की दूरी : साधारणतः मॉ –बाप बालिकाओं को उसी स्तर तक शिक्षा प्रदान करते हैं जिस स्तर तक की पाठशाला गॉव में हैं। उच्च–शिक्षा के लिए बालिकाओं को घर से बाहर भेजना उचित नहीं समझते। –असुरक्षा की भावना। अधिक आयु की समस्या। –पाठशाला में बुनियादी सहूलतों की कमी –पाठशाला में अनुकूल वातावरण की कमी। घर के आत्मीय माहौल तथा पाठशाला के अनुशासित वातावरण में तालमेल की कमी। –अभिभावक ग्राम शिक्षा समिति क्या करें ? –बच्चे का जन्म प्रमाण पत्र अवश्य लें। ग्राम प्रधान इसमें सहायता कर सकतें हैं। –जन्म के उपरान्त बच्चे का नाम ग्राम शिक्षा रजिस्टर में दर्ज कराएं। –ग्राम शिक्षा रजिस्टर को अपडेट करने में अध्यापक की सहायता करें। –3 वर्ष का होने पर बच्चे को आंगनबाड़ी में तथा 5 वर्ष का होने पर पाठशाला में नामांकित करें। –प्रत्येक बच्चे का नामांकन सुनिश्चित करें। –अगर बच्चा पाठशाला में दाखिल नहीं होता है तो इसका कारण पता करें तथा समस्या के समाधान का प्रयास करें। मात्र अपने बच्चों को पाठशाला भेज कर संतुष्ट न हो जाएं। –यह सुनिश्चित कर लें कि सभी बच्चे नियमित रूप से पाठशाला जाएं। पाठशाला के समय में बेवजह घूम रहे बच्चे से पाठशाला न जाने का कारण पूछें। बच्चे के अभिभावकों से मिल कर उन्हें बच्चे को नियमित रूप से पाठशाला भेजने को प्रेरित करें। –ग्राम शिक्षा समिति की बैठकों में उन बच्चों की जानकारी लें जो नियमित रूप से पाठशाला भेजने को प्रेरित करें। –पाठशाला छोड़ने वाले बच्चों के बारे में पाठशाला छोड़ने के कारणों का पता करें। तथा उसके समाधान का प्रयास करें। –पाठशाला में विभिन्न सुविधाओं और साफ–सफाई में अध्यापकों को सहयोग दें। –पाठशाला में पीने के पानी, शौचालयों जैसी सुविधाएं जुटाने में सहायता करें। –घुमंतु परिवारों के बच्चों, विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए सरकार की ओर से चल रही योजनाओं की जानकारी लोगों को दें ताकि ज़्यादा से ज़्यादा लोग इनका लाभ उठा सकें। –बालिकाओं की शिक्षा के लिए लोंगों को प्रेरित करें। –ब्रिज कोर्स के लिए राष्ट्रीय मुक्त विश्व विद्यालय द्वारा करवाए जाने वाले कोर्स इत्यादि की जानकारी लोगों को दें।

### ● ठहराव

बच्चे का नांमाकन पाठशाला में जितना जरूरी है, उतना ही जरूरी है उसका पाठशाला में ठहराव सुनिश्चित करना। सर्व शिक्षा अभियान का उददेश्य सभी बच्चों को प्रारंभिक शिक्षा पूरी करवाना है। ऐसे में अगर बच्चा शिक्षा बीच में छोड़ देता है तो बच्चे की शिक्षा के उददेश्यों की पूर्ति नहीं होती।

बच्चों के स्कूल में ठहराव न होने के निम्न कारण हैं :

–पाठशाला और घर के वातावरण में अन्तर। –बच्चों की शिक्षा के प्रति अरूचि।
–पाठशाला में बुनियादी जरूरतों जैसे पीने का पानी, शौचालयों आदि की कमी।
–बालिकाओं को घर से दूर शिक्षा के लिए भेजने में असुरक्षा की भावना।
–समाज में शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी
–अध्यापकों द्वारा विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की विशेष जरूरतों की पूर्ति न कर पाना। –अध्यापकों द्वारा शिक्षण की विभिन्न विधियों का प्रयोग न करना। इससे बच्चों को पाठयचर्या बोझिल व भारी लगती हैं।
–अभिभावकों द्वारा घरेलू कार्यों में बच्चों का सहयोग लेना। इससे बच्चे बार –बार स्कूल से छुटटी लेते हैं और पाठयचर्या को सीखने में पिछड़ जाते हैं।
–फेल होने के डर से भी बच्चों में स्कूल में ठहराव कम हो जाता है। सतत समग्र मूल्यांकन से बच्चे इस भय से बच सकते हैं।

**बच्चों का पाठशाला में ठहराव सुनिश्चित करने के लिए ग्राम शिक्षा समिति एवं अध्यापक क्या करें :**

–पाठशाला में समय –समय पर विभिन्न कार्यकमों जैसे–बाल मेले, मीना उत्सव, महत्वपूर्ण दिवस का आयोजन हो ताकि बच्चों को स्कूल आकर्षित करे।
–पाठशाला में आयोजित इन कार्यकमों में अभिभावक, ग्राम शिक्षा समिति के सदस्य एवं अध्यापक सभी अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें। –अभिभावकों से स्कूल स्तर पर होने वाली बैठकों में शिक्षा के महत्त्व पर चर्चा करें।
–बालिका शिक्षा का महत्त्व बताएं तथा माता –पिता को इसके लिए प्रेरित करें।
–पाठशाला के विकास में जनसहयोग लेना ताकि आवश्यकतानुसार पाठशाला के लिए सुविधाएं जुटाई जा सकें। –पाठशाला के गुणात्मक शिक्षा के प्रयासों को बल देने के लिए अध्यापकों अभिभावकों, ग्राम शिक्षा समिति के सदस्यों में निरन्तर बातचीत होना जरुरी है। –पाठशाला कें शौचालयों विशेषकर बालिका शौचालय निर्माण को प्राथमिकता दें।
–मातृ–अध्यापक संघ की बैठकों मे शिक्षण – अधिगम संबधी समस्याओं पर बातचीत करना तथा उनका समाधान निकालना। –सतत समग्र मूल्यांकन को सही ढंग से क्रियान्वित करवाना। –अभिभावकों को प्रेरित करना कि वे घरेलू कार्यों में बच्चों का सहयोग स्कूल समय पर न लें। उसे बार –बार स्कूल से छुटटी न लेने दें ताकि वे पाठयचर्या को सीखने में न पिछें।
–अध्यापक विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की विशेष जरूरतों की पूर्ति का प्रयास करें।

उपरोक्त प्रयासों से बच्चों की स्कूल छोड़ने की प्रवृति को रोका जा सकता है।

### ● मूल्य शिक्षा

एक बच्चे के पहले शिक्षक माता – पिता होते हैं। वह प्रारम्भ से ही बच्चों के पूरे जीवन के लिए मूल्य निर्माण करते हैं, नींव डालते हैं। आज बढ़ती हुई सामाजिक हिंसा, समस्याओं की जटिलता, सम्बंधों में तनाव तथा सामाजिक सामंजस्य में कमी के कारण शिक्षा में मूल्यों का ह्रास हो गया है। इस घुटन से त्रस्त शिक्षक, अभिभावक तथा छात्रों के बीच आजकल पूरे विश्व में मूल्यों की आवश्यकता को तीव्र रूप से अनुभव किया जा रहा है। इसलिए शिक्षकों, अभिभावकों एवं समाज के चुने हुए प्रतिनिधियों से एक बार इन समस्याओं के प्रति उत्तरदायित्व भरे दृष्टिकोण अपनाने का आग्रह किया जा रहा है। आज सभी विद्यार्थियों के आचरण में निरन्तर हो रही गिरावट उनकी मूल्यों के प्रति अरूचि से समाज चिन्तित है। सभी को मिलजुल कर सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए बच्चों में मूल्यों का विकास करना होगा। अभिभावक, चुने हुए प्रतिनिधि एवं शिक्षक मिलजुल कर बच्चों को जीवन मूल्यों पर आचरण करने के लिए तैयार करें तथा दुनियां को बेहतर स्थान बनाने के लिए उन्हें प्रेरित करें। वर्तमान जीवन मूल्यों पर स्त्रोत व्यक्ति सभी प्रतिभागियों से चर्चा करें।

इनमें प्रमुख है :

–शान्ति, –सम्मान, –प्रेम, –सहनशीलता, –ईमानदारी, –विनम्रता, –सहयोग, –प्रसन्नता, –उतरदायित्व, –सादगी/सरलता, –एकता, –स्वतन्त्रता

उपरोक्त जीवन मूल्यों पर ग्रामीण शिक्षा समिति, मातृ–अध्यापक संघ व अध्यापक आपस में चर्चा करें कि हम बच्चों में इन मूल मूल्यों को कैसे विकसित कर सकते हैं।

#### ग्राम शिक्षा समिति के कार्य- एक नज़र

– गॉव में 6 से 14 वर्ष के सभी बच्चे पाठशाला जा रहे हैं या नहीं देखना।
– गॉव में लड़कियों, ग़रीब बच्चों, अनुसूचित जाति एवं जनजाति तथा अन्य पिछड़े वर्ग के बच्चों की शिक्षा की तरफ विशेष ध्यान देना।
– बच्चों के माता –पिता को बच्चों को पाठशाला भेजने के लिए प्रेरित करना।
– यह देखना कि गॉव के सभी बच्चे रोज़ पाठशाला जाएं।
– सरकार की ओर से दी जाने वाली छात्रवृतियां तथा अन्य सुविधाएं समय पर दिलवाना।
– गॉव में बाहर से आए अध्यापकों के ठहरने के उचित प्रबन्ध में सहायता करना।
– यह देखना कि गॉव के सभी स्कूल ठीक चल रहें है या नहीं। अगर पैसे, ज़मीन या कोई दूसरी ज़रूरत हो तो समुदाय की सहायता से उसे पूरा करने का प्रयास करना
– पाठशाला और ऑगनबाड़ी में तालमेल बनाना।
– गॉव का शैक्षिक नक्शा तैयार करवाना : सर्वेक्षण से पहले गॉव का शैक्षिक नक्शा तैयार किया जाना चाहिए ताकि पता लग सके कि कितने बच्चे पाठशाला जा रहें हैं।
– शैक्षिक नक्शे में गॉव में मौजूद अन्य सुविधाओं जैसे हैंड–पम्प, बिजली, मंदिर, प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र, आंगनवाड़ी, माध्यमिक, उच्च, वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला, महाविद्यालय इत्यादि सब दिखाया जाए।
– ग्राम शिक्षा सर्वेक्षण करनाः शैक्षिक नक्शा बनाने के बाद घर –घर जा कर बच्चों के नाम लिखने होंगे तथा उनके माता –पिता से उनकी शिक्षा से सम्बन्धित बातचीत करनी होगी। सर्वेक्षण का कार्य गॉव के अध्यापक पर ही न छोड़ दें बल्कि ग्राम शिक्षा समिति के सदस्य ग्रुप बना कर यह कार्य सम्पन्न करें।
– सप्ताह या 15 दिन में एक दो बार ग्राम शिक्षा समिति पाठशाला जा कर यह जानकारी लें कि कौन कौन से बच्चे स्कूल नहीं आ रहे। ऐसे बच्चों के मॉ –बाप का नाम नक्शे में देख कर उनके घर जा कर बच्चों के न आने के कारणों का पता लगाएं तथा नियमित रूप से पाठशाला में बाल मेलों, मॉ –बेटी मेलों का आयोजन, गॉव में महिला सम्मेलनों खेलकूद का आयोजन करना। चित्र–कला, कहानी, नाटक, कविता, सांस्कृतिक कार्यकमों आदि अन्य प्रतियोगिताओं का आयोजन करना। 26 जनवरी तथा 15 अगस्त जैसे राष्ट्रीय पर्वो को मनाया जाना चाहिए।
– पाठशाला को मिलने वाले अनुदानों का सही उपयोग करना तथा खर्च का ब्यौरा रखना।
– पाठशाला में निर्माण कार्यो को करवाना तथा उसका निरीक्षण करना।
– पाठशाला के लिए सामान की खरीद में नियमों का पालन करना।
– मध्याह्न भोजन का प्रबन्ध करना तथा समय समय पर उसकी जांच करना।

#### पाठकों से...

प्रदेश के विभिन्न जिलों में 'खण्ड स्तर पर सर्व शिक्षा अभियान की गतिविधियां एवं उपलब्धियां' शीर्षक से यह कालम नियमित रूप से प्रकाशित किया जा रहा है जिसकी हर कड़ी में एक नया शिक्षा खण्ड शामिल होगा। खण्ड स्रोत समन्वयक अपने खण्ड की विभिन्न गतिविधियों एवं उपलब्धियों को फोटो सहित हमारे पते पर भेज सकते हैं।

इसके अतिरिक्त अध्यापकों, शिक्षाविदों, शिक्षाशास्त्रियों एवं समाज के बुद्धिजीवियों से भी प्रारंभिक शिक्षा संबधी विभिन्न लेख/रचनाएं इस पृष्ठ हेतु निम्न पते पर आमंत्रित हैं।

**राजेश शर्मा**
**राज्य परियोजना निदेशक,**
**राज्य परियोजना कार्यालय (सर्व शिक्षा अभियान),**
**डी.पी.ई.पी.भवन, लाल पानी, शिमला**–171001
दूरभाष : 2658668, फैक्स : 2808624

प्रस्तुति : ज्योति रावत

## खण्ड स्तर पर सर्व शिक्षा अभियान की गतिविधियां एवं उपलब्धियां

### शिक्षा खण्ड पांवटा साहिब–सिरमौर

**शिक्षा** खण्ड पांवटा साहिब जिला सिरमौर के सभी 10 खण्डों में से एक ऐसा खण्ड है जिसकी भूमि लगभग समतल है। इस खण्ड के क्षेत्र से उत्तराखण्ड राज्य व हरियाणा राज्य की सीमाएं लगती हैं। उत्तराखण्ड को अलग करने वाली सीमा पर यमुना नदी बह रही है। इस क्षेत्र में अत्यधिक गर्मी पड़ती है। पांवटा साहिब को गुरु की नगरी अथवा पवित्र स्थान कहा जाता है। सिखों का प्रसिद्ध व ऐतिहासिक गुरुद्वारा पांवटा साहिब में स्थित है।

शिक्षा खण्ड पांवटा साहिब में कुल 176 पाठशालाएं हैं। जिनमें से 126 पाठशालाएं प्राथमिक स्तर व 50 पाठशालाएं उच्च प्राथमिक स्तर की हैं छः–छः पाठशालाएं प्राथमिक व उच्च प्राथमिक स्तर की जून 2009 से आरम्भ की गईं। शिक्षा खण्ड पांवटा साहिब की सभी पाठशालाएं ग्रीष्मावकाश वाली हैं। वार्षिक परीक्षाएं मार्च में होती हैं। प्राथमिक स्तर पर कुल छात्र 9388 हैं जिनमें से 4685 छात्र तथा 4703 छात्राएं शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। प्राथमिक स्तर पर 23 केन्द्र मुख्य शिक्षक, 34 मुख्य शिक्षक, 380 जेबीटी, 6 ग्रामीण विद्या उपासक तथा 9 पैट अध्यापक कार्य कर रहे हैं यानि प्राथमिक स्तर पर कुल 452 शिक्षक कार्य कर रहे हैं। उच्च प्राथमिक स्तर पर 7250 कुल छात्र हैं जिनमें से 3789 छात्र तथा 3461 छात्राएं हैं। उच्च प्राथमिक स्तर पर विभिन्न श्रेणियों के कुल 223 अध्यापक कार्यरत हैं।

प्राथमिक स्तर पर सतत समग्र मूल्यांकन प्रणाली पूर्ण रूप से लागू की गई है। सत्र 2008–09 में इस प्रणाली के आधार पर मूल्यांकन किया गया था। प्राथमिक व उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्रों का उपलब्धि स्तर ग्रेड ए में 742, बी में 2548, सी में 3219, डी में 4761 तथा ई ग्रेड में 5368 छात्र–छात्राएं हैं।

सर्व शिक्षा अभियान की ओर से प्रत्येक वर्ष सभी अध्यापकों को 15 दिन का अनिवार्य प्रशिक्षण दिया जाता है। चालू सत्र में 11 दिन का प्रशिक्षण 675 कुल अध्यापकों में से 653 अध्यापकों ने ग्रहण कर लिया है। शेष 4 दिन का प्रशिक्षण माह सितम्बर 2009 में करवाया जाएगा। प्रशिक्षण में 5 दिन में सामान्य प्रशिक्षण तथा 10 दिन विषय वस्तु पर आधारित प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रत्येक वर्ष खण्ड स्तर पर मेडिकल कैम्प आयोजित किए जाते हैं जिनमें अक्षम बच्चों के प्रमाण–पत्र बनाए जाते हैं। पिछले वर्ष भी 42 बच्चों के प्रमाण–पत्र बनाए गए थे। अक्षम बच्चों के अभिभावकों की मीटिंग आयोजित की जाती है जिसमें उन्हें प्रशिक्षण दिया जाता है कि वे अपने बच्चों को किस प्रकार सामान्य बच्चों की तरह रहना, खाना– पीना व अन्य कार्य करना सिखाएं। शिक्षा खण्ड पांवटा साहिब में गृह आधारित शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत इस समय 27 छात्र/छात्राएं शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

जिनको समय–समय पर 14 अध्यापक देख रहे हैं। सभी पाठशालाओं के पास अपने भवन हैं जिनके रखरखाव के लिए प्रत्येक वर्ष 7500 रुपये पाठशाला मरम्मत ग्रांट सर्व शिक्षा अभियान की ओर से प्रदान की जाती है। 72 पाठशालाओं में दोपहर के भोजन को पकाने के लिए रसोईघरों का निर्माण पूर्ण हो चुका है और भोजन इन रसोई घरों में सुचारू रूप से पक रहा है। अन्य पाठशालाओं में रसोई घरों का निर्माण कार्य चल रहा है।

छात्रों के उपलब्धि स्तर को बढ़ाने के लिए प्रत्येक प्राथमिक पाठशाला में दो घंटे आधार व आधार प्लस का कार्यक्रम किया जाता है। छात्र जिस स्तर का होता है उसे उसी स्तर के अनुसार सिखाया या पढ़ाया जाता है। सर्व शिक्षा अभियान की ओर से क्लस्टर स्तर पर प्रथम आने वाले छात्र/छात्राओं को एक एजुकेशनल किट दी जाती है जिसमें लगभग 18 किस्म का सामान होता है।

सम्मान समारोह, सामुदायिक सम्मेलन, बाल मेले, छात्रा भ्रमण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। खण्ड प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी कार्यालय पांवटा साहिब में है जबकि खण्ड स्रोत समन्वयक कार्यालय माजरा में स्थित है दोनों कार्यालयों में 12 किलोमीटर की दूरी है। प्राथमिक स्तर पर सभी छात्रों को टाट–पट्टी बैठने के लिए उपलब्ध करवाई जाती है परन्तु प्राथमिक पाठशाला पांवटा साहिब में समुदाय के सहयोग से 50 हजार की लागत से 100 छात्रों के बैठने के लिए डेस्क उपलब्ध करवाए गए। प्राथमिक पाठशाला पांवटा साहिब एक आदर्श पाठशाला है लेकिन पाठशाला का वातावरण व व्यवस्था ऐसी है जैसे यह एक सरकारी पाठशाला न होकर एक प्राइवेट पाठशाला है। वैसे तो प्राथमिक किशनपुरा व मालगी में भी डेस्कों पर बैठकर छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

पिछले वर्ष 75 छात्रों को प्रवेश दिलाया गया है जो स्कूल से बाहर थे। 30 बच्चों ने एआईई के अधीन शिक्षा ग्रहण की। छल्लू वाला व गाड्डा गूही में ईजीएस केन्द्र चल रहे हैं जिनमें केवल गुज्जर समुदाय के बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। श्रीमती सुरेखा चौधरी जी ने गोरखूवाला व खोड़ोवाला पाठशालाओं में गरीब बच्चों को स्वेटर, वर्दियां दान स्वरूप भेंट कीं तथा प्रत्येक कक्षा में प्रथम व द्वितीय स्थान ग्रहण करने वाले को 300 व 200 रुपये की राशि भी प्रदान की।

**रामपाल,**
बी.आर.सी.सी., प्राथमिक
खण्ड पांवटा साहिब, सिरमौर